

पद ७

(राग: भैरवी - ताल: धुमाळी)

माणिक प्रभुवर परतर सुखकर सुरवर ईश्वर दत्तप्रभो । भवहर
गिरिधर दिगंबर सांबर हरिहरवंदित देव विभो । सच्चिद्धन
निजभक्तप्रपालन संसृतिदारुणनाशन भो । जय जय जय जय
जयप्रद स्वार्थद शर्मद नैजजनेषु हि भो ॥ध्रु.॥ सज्जनमंडन
दुर्जनखंडन दुर्मददंडनकारक भो । मणिगणहारविराजित राजित
नाशितदितिसुतवृंदक भो । अत्रिसुत त्रिगुणात्मक यदुनृपवंदित हय
हय तारक भो ॥१॥ मोहग्राहविदारक तारक मायाहारक रक्षक
भो । स्वात्मसुखैकरसात्मक नतजननिजपददायक पोषक भो ।
भवजलसिंधुसुतारक रुक्मिकशिपुविदारक तोषक भो ॥२॥
मनोहरनंदन नंदनवनतरु जात कुसुमकृतहारविराजित । मायाकृत
सदसन्मयस्थिरचरचालक ज्ञानविभूषणभूषित । हरिहरविधिमुख
सुरगणकिंनरगंधर्वादिमुनिजनवंदित ॥३॥ निगमसमुद्रविशोधक

चिन्मयमूर्तिनिरामय भो भगवन् । अज्ञानांधःकारविनाशक
हृदयप्रकाशक भो स्वामिन् । भक्तसमूहमनोरथसुरतरु योगिराज
महाराजन् ॥४॥ सज्जनहृदयसरोरुहविस्तृतमध्यविहारिन्
लक्ष्मीपते । निरंजन निर्गुण निरीह निराकृति अष्टविविध
सुसिद्ध्यवनिपते । अंतर्दाहविशामक सद्गुरो नानारूपक
लोकपते ॥५॥ द्विजकुलभूषण त्रिभुवनतोषण निशिचरकर्षण
भूतपते । पंकजलोचन दैत्यनिकृंतन हे नारायण विप्रपते । सदोदित
परिपूर्ण सकलार्तिनाशक धर्मसंरक्षण सिद्धपते ॥६॥ त्रिभुवननाथ
स्वयं निर्नाथ सुकामकैवल्यधर्मार्थपते । आनंदाख्यप्रमेय निरुपम
शांतिदयामय पृथ्वीपते । सकलमतस्थापक सन्नायक नानारूपक
विबुधपते ॥७॥ हनुमदनुज नरकेसर्यग्रज द्विनेत्र द्विभुज दण्डधारक
भो । बयांबातनय श्रीवत्सकुलोद्भव नेत्रकरंजितकज्जल भो ।
नैजदासमनोहरपालक अखंडानंदविवर्धक भो ॥८॥ संस्कृत
भाषासूत्रविगुंफितनवनवमणिमयहारमिदम् । ये नित्यमनेनार्चयन्ति
प्रभुं सत्यं सुखिनः ते सुखदम् । ये प्रपठन्ति सुभक्तियुतास्ते प्राप्नुवन्ति
मुनिवन्द्यपदम् ॥९॥